International Journal of Sanskrit Research 2022; 8(3): 03-05

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(3): 03-05
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 04-03-2022
Accepted: 06-04-2022

वेद प्रकाश पाण्डेय
पीएच.डी. शोध छात्र,
बौद्ध अध्ययन विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
वेद प्रकाश पाण्डेय
पीएच.डी. शोध छात्र,
बौद्ध अध्ययन विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली, भारत

विकासात्मक कार्यों की प्रतीक्षा करता बौद्ध तीर्थ कुशीनगर

वेद प्रकाश पाण्डेय

प्रस्तावना

वर्तमान कुशीनगर जनपद बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध के महापरिनिर्वाण/निर्वाण स्थल के रूप में विख्यात है। ऐतिहासिक दृष्टि से प्राचीन साहित्यों, अभिलेखों, मुद्राओं से कुशीनगर जनपद का अत्यधिक समृद्ध विवरण प्राप्त होता है। प्राचीन काल में कुशीनगर कौशल महाजनपद का एक अंग हुआ करता था। वर्तमान कुशीनगर जनपद उत्तर प्रदेश राज्य में स्थित एक प्रमुख जिला है, जिसका एक छोर पड़ोसी राज्य बिहार में तो एक छोर पड़ोसी देश नेपाल की सीमा पर स्थित है। कशुीनगर जनपद 1994 ईस्वी तक उत्तर प्रदेश के देवरिया जनपद का उत्तरी भाग था, जिसे 1994 में तत्कालीन मुख्यमंत्री मायावती जी ने देवरिया से अलग कर पडरौना नामक एक नया जनपद बनाया। 1997 में तथागत भगवान के परिनिर्वाण स्थल के नाम पर जनपद का नाम बदलकर कुशीनगर किया गया। 12वीं सदी के अंत तक मुस्लिम आक्रमणों एवं धार्मिक उपेक्षा के शिकार होने के कारण यह स्थल एक खंडहर में बदल गया। ब्रिटिश शासन के उपरांत 1784 में सर विलियम जोंस के प्रयासों से पुनः यह स्थल प्रसिद्धि प्राप्त करने लगा, तत्पश्चात् डॉक्टर फ्रांसिस बुकानन महोदय ने भी वर्तमान कुशीनगर का व्यापक स्तर पर सर्वेक्षण कार्य किया। 1862 में सर कनिंघम ने कुशीनगर के पुरास्थलों का वृहद सर्वेक्षण किया। कनिंघम के कार्यों से प्रेरणा लेकर इनके कार्यों को आगे बढ़ाते हुए 1896 ई. में फ्यूहर तत्पश्चात् 1904 में डॉक्टर वोगेल आदि अनेकों विद्वानों के साथ ही प्रथम भारतीय पंडित हीरानन्द शास्त्री की अध्यक्षता में खुदाई की गई जिससे अनेकों महत्त्वपूर्ण सामग्री प्रकाश में आयी। तत्पश्चात् 1789 में गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर शैल नाथ चतुर्वेदी ने इस क्षेत्र का भ्रमण कर फाजिलनगर एवं सठियाँव टीले का उत्खनन कार्य किया। इसके साथ ही समय–समय पर अनेकों विद्वानों ने कुशीनगर के पुरास्थलों का सर्वेक्षण एवं निरीक्षण कार्य किया। जनपद उत्तर प्रदेश के उत्तर पूर्व में तराई भूभाग पर स्थित वर्तमान में गोरखपुर मण्डल से संबंध यह जिला प्रारम्भ में देवरिया जनपद के अंतर्गत आता था। इसे 1994 में अलग करके पडरौना नामक अलग जिले के रूप में गठित किया गया, जिसे बाद में 1997 में बौद्ध स्थल कुशीनारा के नाम पर इसका नाम कुशीनारा हुआ। 2873 वर्ग का यह जनपद पडरौना, हाटा, तमकुहीराज तथा कसया तहसीलों में बंटा हुआ है। कुशीनगर जनपद क्षेत्रफल के नज़रिये से राज्य में 44वां स्थान रखता है। यह जिल उत्तर से दक्षिण 70 किमी. एवं पूर्व से पश्चिम 80 किमी. लंबा है जिसके पूर्व में बिहार का गोपालगंज जिला, दक्षिण मे देवरिया जिला, पश्चिम में महाराजगंज जिला एवं उत्तर में नेपाल स्थित है।

मध्य गंगा घाटी के पास में स्थित कुशीनगर जिला का सम्पूर्ण भू भाग समतल एवं काफी उपजाऊ है। उत्तर–पश्चिम से दक्षिण–पूर्व की ओर यह जिला समुद्र तल से 126.6 मी. पर स्थित है। अपने भौगोलिक स्थिति, उर्वरता, नदी, झील इत्यादि से सम्पन्न यह क्षेत्र मनुष्यों के लिए आकर्षण का केन्द्र रहा है।

बुद्ध काल में कौशल जिला (मध्य देश) में कई संस्कृतियों का समावेश एवं विकास हुआ है, जिन्होंने न केवल इस मैदानी क्षेत्र को सांस्कृतिक रूप से सम्पन्न किया है बल्कि सम्पूर्ण उत्तर भारत को सांस्कृतिक विरासत भी प्रदान की है। कुशीनगर क्षेत्र जो उस समय कौसल महाजनपद का अंग था, का इतिहास हमें विभिन्न स्रोतों से मिलता है।

तात्कालिक समय में कुशीनगर जनपद में मूलतः जातियाँ बहुत ही कम संख्या में हैं, यह मुख्यतः अन्य जातियों के सामाजिक रीति–रिवाजों एवं उनकी परम्पराओं में सम्मिलित हो चुके हैं। परंतु 19वीं और 20वीं सदी की गणना अनुसार जनपद में बहेलिये, बीधक, मुसहर, कंजड़, आखेटक आदि जातियाँ पाई जाती हैं। अतः इन आदिम जातियों के सामाजिक नृतात्वीय अध्ययन से यहाँ के प्रागैतिहासिक संस्कृतियों के पुनःनिर्माण में सहमति प्राप्त होता है।

कुशीनगर पुरातात्त्विक के दृष्टिकोण से अधिक समृद्ध है एवं इनका संबंध ऐतिहासिक कालीन संस्कृतियों से है। इस जिले से संबन्धित अनेकों पुरातात्त्विक अवशेष – प्रतिमाएँ, मुद्रा, मुहर एवं स्तूप आदि प्राप्त हुए हैं। अतः यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि कुशीनगर जनपद में अनेकों संस्कृतियों के अवशेष विद्यमान हैं।

कुशीनगर के पुरातात्त्विक अध्ययन की शुरुआत सर अलेक्जेंडर कनिंघम ने 1861 में अपने दो प्रमुख उद्देश्यों को ध्यान में रखकर की थी। उनका मुख्य उद्देश्य पुरासामग्रियों का संग्रह करना एवं तथागत से जुड़े ऐतिहासिक एवं साहित्यिक कार्य से जनपद के अनेकों अज्ञात एवं उपेक्षिता पुरास्थल को प्रकाश में लाना था। कनिंघम महोदय द्वारा ही कसया के समीप टीलों के उत्खनन के परिणामस्वरूप ही जनपद के पहचान का विवाद समाप्त हुआ।

कनिंघम की रिपोर्ट को आधार बनाकर ए.सी.एल. कलाईन ने 1876–77 में कुशीनगर का उत्खनन किया, जिसमें उन्हें सफलता प्राप्त हुई। इतना ही नहीं कनिंघम एवं कलाईन दोनों मल्लों की राजधानी पावा के विषय में एकमत नहीं हैं। पावा की पहचान की समस्या आज भी वैसे ही विद्यमान है जैसे कि पहले हुआ करती थी। कनिंघम एवं कलाईन ने जनपद के कतिपय अन्य अनेकों पुरास्थलों का सर्वेक्षण किया है। कनिंघम की पुस्तक एंशियन्ट ज्योग्राफी में आप उनका अध्ययन देख सकते हैं।

फ़्यूहरर ने कुशीनगर के पुरावशेषों को प्रकाशित करने में सराहनीय कार्य किया है। प्रो. ए.के नारायण एवं पी.सी. पंत ने भी कुशीनगर पर व्यापक कार्य करके कुछ नए पुरास्थलों को प्रकाश में लाये गये हैं।

महापरिनिर्वाण स्तूप

यहाँ पर कुशीनगर के पर्यटन का मुख्य केंद्र है। यहीं पर भगवान तथागत की अस्थियाँ स्थापित हैं। महापरिनिर्वाण विहार के पीछे लगभग 40 फीट ऊँचा स्थान है। दूर से देखने पर स्तूप और विहार के दर्शन एक साथ होते हैं। क्योंकि दोनों एक साथ खड़े हैं। संभवतः प्राचीनकाल में यह 200 फीट तक ऊँचा रहा था। परंतु समय के साथ–साथ सुरक्षा ना होने की वजह से यह खत्म सा हो गया। इसी स्तूप में कुशीनगर के मल्लों द्वारा भगवान बुद्ध की अस्थियों को पात्रों में सुरक्षित करके रखा गया था। तत्पश्चात् कालांतर में जब सम्राट अशोक ने तथागत के सभी स्थानों पर स्तूपों का निर्माण कराया था तब उसी क्रम में कुशीनगर में वर्तमान स्तूप के नीचे अस्थि अवशेषों को रखकर एक विशाल स्तूप खड़ा करवाया गया था। प्राचीन काल से ही देश–विदेश से श्रद्धालु आते रहते हैं, जो इस की श्रद्धापूर्वक पूजा करते हैं।

महापरिनिर्वाण मंदिर

महापरिनिर्वाण मंदिर खंडहरों में स्थित है। यह स्थल मुख्य स्तूप के पश्चिम भाग में स्थित है। जो कि उत्खनन कार्य से पूर्व एक टीले के रूप में स्थापित था। इस स्थल पर सर्वप्रथम 1876 में कालाईन द्वारा उत्खनन कार्य करवाया गया था जिसमें उन्हें छत विहीन कई ऊँची–ऊँची दीवारें प्राप्त हुई। इस स्थल पर एक गर्भगृह एवं एक प्रवेश द्वार मिला। इस स्थल पर लाल बलुआ पत्थर से एक ही शिला पर निर्मित पश्चिम दिशा की तरफ मुख करके लेटे हुए परिनिर्वाण की मुद्रा वाली एक 20 फीट की बुद्ध प्रतिमा मिली जिसकी ऊँचाई 2 फीट है, जिन्हें 5वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान स्थापित किया गया था। भारतीय प्रतिमाओं की समीक्षात्मक रूप से देखने पर तथागत की प्रतिमा शयन अवस्था में विराजमान है, जिसकी तुलना डॉ. जे.एन. मुखर्जी ने वैष्णव परंपरा में निर्मित भगवान विष्णु वेफ शयन अवस्था वाली मूर्ति से की है। इस टीले के मलवों को देखने के पश्चात् यहाँ इस बात का कोई संदेह नहीं होता कि यहाँ से प्राप्त गर्भगृह अत्यधिक छोटा प्रतीत होता है एवं प्रदक्षिणा पथ के लिए कोई भी स्थल नहीं दिखता। अतः इस बात को स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि पाँचवीं सदी में बनी महापरिनिर्वाण मूर्ति के उपरांत अनेकों बार इस मंदिर में बदलाव होता रहा है। इस बात को यहाँ पर मूर्ति में लगे बालू के प्लास्टर भी सिद्ध करते हैं। इस बात का दावा करना कठिन है कि प्राप्त विहार वही पुराना है, जिसमें परिनिर्वाण की इस वृहद प्रतिमा को सबसे पहले रखा गया था, जिसका वर्णन ह्वेनसांग ने अपनी पुस्तक में किया है। उत्खननकर्ता कालाईन द्वारा इस विहार को देखकर इसका निर्माण कुशीनगर के पतन के समय 11वीं 12वीं सदी का बताते हैं। यहाँ पर स्थित वर्तमान मंदिर का कार्लाइन ने जीर्णोद्धार कराया और मूर्ति की मरम्मत कराकर उसे स्थापित किया था। अब वर्तमान में इसी विहार का समय–समय पर जीर्णोद्धार होता रहा है।

चीनी बौद्ध विहार

चीनी बौद्ध विहार बर्मा मंदिर के आगे उत्तर में स्थित है। इस विहार का निर्माण 1956 ई. में भिक्षुणी कोलेन द्वारा दी गई दान से कराया गया। इसमें प्रवेश द्वार के अंदर घुसने पर सामने एक बुद्ध विहार दिखता है जिसमें भगवान बुद्ध की प्रतिमा स्थापित की गई है। विहार में बाएं तरफ एक बाग है, जिसमें से गुजरता हुआ एक मार्ग हमें वहाँ ले जाता है जहाँ पर लुंबिनी, बोधगया, सारनाथ और कुशीनगर के विहारों की प्रतिकृतियाँ निर्मित की गई हैं। इस विहार में जाने से ऐसा प्रतीत होता है कि मानो चारों पवित्र स्थल आकर एक स्थान पर मिल गए हों। यहाँ पर एक गोलाकार बौद्ध विहार भी है जिसके बाहर दीवारों पर विभिन्न मुद्राओं में तथागत की आसनबद्ध प्रतिमाएं स्थापित की गई है। यह चीनी बुद्ध विहार अत्यधिक स्वच्छ एवं सुंदर है। मुख्य मंदिर में एक दो मंजिला इमारत है जो चीनी शैली में निर्मित है, जिसमें ड्रेगन की छवियों और बुद्ध को हँसते हैं। इस मंदिर में कमल के तालाब भी हैं।

बर्मी बुद्ध विहार

कुशीनगर के पर्यटन को बढ़ावा देने में बर्मी विहार का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह पर्यटकों के लिए एक विशेष निवास स्थान भी है, साथ ही एक दर्शनीय स्थल भी। चीनी विहार के साथ इस विहार का एक भव्य द्वार स्थित है। बाहर से प्रवेश करने पर एक पगोड़ा खड़ा है, जिस पर चमकता हुआ सुनहरा रंग किया गया है, जो बर्मी कला का एक अद्भुत नमूना है जो कि 108 फीट ऊँचा है जिसमें 15 फीट की छतरी एवं स्तूप की ऊँचाई 93 फीट है जो कुशीनगर का एक प्रमुख आकर्षण का केन्द्र है। पगोड़े के अंदर भगवान की परिनिर्वाण मुद्रा में लेटी हुई एक प्रतिमा स्थापित है तथा गोलाकार दीवार पर भगवान बुद्ध के जीवन से संबंधित घटनाओं को आकर्षित चित्रों के माध्यम से दर्शाया गया है। विहार के दायें तरफ एक छोटा सा तालाब स्थित है इसके ऊपर एक छोटा सा विहार बनाया गया हैं सरोवर के जल में बुद्ध विहार का प्रतिबिंब मनमोहन लगता है। विहार में उत्तर भारत की प्रथम बौद्ध धर्मशाला की दिखाई पड़ती है, जिसका प्रवेश द्वारा पूर्व की ओर है। द्वार से प्रवेश करने पर एक बहुत बड़ा सा प्रांगण दिखाई देता है, जिसके चारों ओर कमरे बने हुए हैं। इस प्रांगण के मध्य में एक कुआं है। विहार का निर्माण भन्ते महावीर ने खेजारी बाबू के दान से 1828 ई. में कराया था। विहार में एक घंटा लगा है, जिसके बारे में कहा जाता है कि इंदौर में धर्मशाला से बाहर आने पर नाम नहीं बुद्ध विहार है। इसके अंदर भगवान की एक अत्यंत सुंदर प्रतिमा स्थापित है। दिल की दीवारों पर अतीत की गौरवशाली भिगो के चित्र लगे हुए हैं जो कि यहाँ पर पर्यटकों का मन मोह लेते हैं।

सूर्य मंदिर

सूर्य भगवान को समर्पित मंदिर गुप्त काल के दौरान बनाया गया था और पुराणों में इसका उल्लेख किया गया है। यह मंदिर सूर्य भगवान की मूर्ति के लिए मशहूर है जिसे एक विशेष काला पत्थर (नीलमनी स्टोन) से बना था। माना जाता था कि मूर्ति 4वीं और 5वीं शताब्दी के बीच हुई खुदाई के दौरान पाई गई थी।

वाटथई मंदिर

यह विस्तृत प्रांगण वाला मंदिर विशेष तौर पर थाई–बौद्ध स्थापत्य शैली में बनाया गया है। इसका निर्माण 1994 ई. में बौद्धों द्वारा दी गई दानराशि से किया गया। इस मंदिर के प्रांगण में की गई बागबानी बहुत ही मनोरम है। कुशीनगर के दर्शनीय स्थल में यह मंदिर महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

रामभर स्तूप

रामभर स्तूप वह स्थान है जहाँ भगवान बुद्ध को महापरिनिर्वाण या अंतिम ज्ञान प्राप्त हुआ था। कुशीनगर में 15 मीटर ऊँचा यह स्तूप प्रमुख आकर्षणों में से एक है। स्तूप बौद्धों के लिए भी सबसे महत्त्वपूर्ण तीर्थस्थल है और यह एक सुखद और हरे–भरे रंग के आसपास के इलाके में स्थित है जो इसे और भी सुंदर बनाता है। कुशीनगर के दर्शनीय स्थल में यह प्रमुख स्थान हैं

कुशीनगर संग्रहालय

यह संग्रहालय 1992–93 के दौरान जनता के लिए खोला गया था और कुशीनगर में पाए गए विभिन्न पुरातात्त्विक खुदाई की विशेषता है। कुशीनगर संग्रहालय में मूर्तियों, मुहरों, सिक्कों और बैनरों और विभिन्न पुरातनताओं की एक विस्तृत विविधता जैसे विभिन्न कलाकृतियों का घर है। भगवान बुद्ध की स्टुको मूर्ति एक हडताली गंधरा शैली में निर्मित संग्रहालय के प्रमुख आकर्षणों में से एक है।

श्रीलंका मंदिर

यह मंदिर एआईके विश्व बौद्ध संस्कृति संघ जापान और श्रीलंका बौद्ध केंद्र के बीच एक संयुक्त उद्यम है। सीढ़ियों की एक उड़ान मुख्य मंजिल की ओर जाता है, जो पहली मंजिल पर एक गुंबददार ईंट संरचना से बना है। मंदिर में अनुष्ठानिक वस्तुओं से घिरा बुद्ध की एक छवि है। स्याही चित्रों के कई फ्रेम छवि के पीछे दीवार को सजाता है।

कनिंघम द्वारा किया गया कार्य आज भी सरकारी संस्थागत रूप से भी जारी है, जिसके परिणामस्वरूप कुछ हद तक समस्या को हल किया जा सकता, परंतु समाधान कार्य अभी पूर्ण रूप से नहीं हो सका है।

कुशीनगर जिले के दो प्रमुख स्थल कुशीनगर एवं पावन में दो महान आत्माओं को निर्वाण की प्राप्ति हुई।

प्रारम्भिक ऐतिहासिक युगीन संस्कृति से जुड़े हुए स्थल नदियों एवं तालाबों के किनारे पाये गए हैं। परवर्ती कालीन कुषाणकालीन अधिकांश पुरास्थलाकृति नदियों से दूर पोखर एवं तालाबों के पास मिलते हैं। संभवतः ऐसा जनसंख्या दबाव वश हुआ होगा।

कनिंघम के सर्वेक्षण कार्य एवं अन्य सभी पुराविदों के उत्खनन कार्यों तथा बौद्ध भिक्षु महावीर के सराहनीय कार्यों के अन्य देशी संस्थाओं में कुशीनगर के प्रति जिज्ञासा थी वह आज भी उतनी ही बनी हुई है। भिन्न–भिन्न देशों के अनुयायी आज भी दर्शन करने आते हैं, वे भी इस थान के उत्थान के स्वप्न देखते हैं। अतः कुशीनगर इस वृहद आशा को दृष्टिगत रखते हुए यहाँ पर किया गया कार्य कहीं न कहीं आज भी अपूर्ण लगता है अतः कुशीनगर में अनेकों कार्यों की आज भी आवश्यकता है।

जैसे जनपद में संग्रहालय एवं बड़े स्तर के पुस्तकालयों को भी स्थापित करके उसमें पुरातत्त्व, इतिहास, दर्शन, धर्म आदि ग्रन्थों को एकत्रित करके जनपद संबंधी विषयों पर गहन अध्ययन के लिए प्रेरित करना चाहिए।

सन्दर्भ

1. अंगुत्तर निकाय प्रकाशन, (मूल) सं. भिक्षु जगदीश काश्यप, बिहार राजकीय पालि मंडल, महाविहार नालंदा, पटना, 1960
2. कल्पसूत्र, भद्रबाहु, विजयसूर्योदय सूरि, बारसासूल प्रकाशक समिति, सूरत, गुजरात, 1980
3. दीघनिकाय, बौद्ध (हि.अ.) राहुल सांकृत्यायन और जगदीश काश्यम, भारतीय विहार परिषद, लखनऊ, द्वि.सं. 1919
4. बुद्ध चरित, अश्वघोष, टीका सूर्य नारायण चौधरी, 2 वाल्यूम, बनारस, 1942
5. दिव्यावदान, स.पी.एल. वैध, मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, 1959
6. मिलिन्दपन्हो, मूल व हिन्दी टीका, वाराणसी, 1979
7. जातक अट्ठकथा, आनन्द कौसल्यायन, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1946
8. स्मिथ, वी.ए., द रिमेन्स नियर कसिया, इन द गोरखपुर, इलाहाबाद, 1896
9. स्मिथ, वी.ए., अर्ली हिस्ट्री आफ इण्डिया, लन्दन, 1924